नई शिक्षा नीति और नई चुनौतियां

डॉ. सत्येंद्र संगाप्पा राऊत
जवाहर महाविद्यालय, अणदूर.

शिक्षा सामाजिक विकास के लिए बनाई गई प्रणाली है। मान लीजिए कि हम कॉलेज शिक्षा को मजबूत, उन्नत और प्रगतिशील बनने के लिए ज्ञान प्रदान करने के साधन के रूप में देखते हैं। कहा जाता है कि शिक्षा समाज का आईना होती है। जिसके माध्यम से समाज की योजना कैसे बनाई जाए और समाज को क्या चाहिए, इसका विचार शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करता है। शिक्षा प्रणाली के कुछ उद्देश्य होते हैं जिनके माध्यम से शिक्षा का प्रचार और प्रसार किया जाता है। प्राथमिक रूप से शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के समग्र जीवन में सुधार करना है। शिक्षा एक समर्थन प्रणाली है जो भोजन, वस्त्र, आवास की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने में मदद करती है। आज पूरी दुनिया में शिक्षा और शिक्षा प्रणाली पर आधारित कई तरह की गतिविधियाँ चल रही हैं। विभिन्न शैक्षणिक संस्थान, शैक्षिक गतिविधियाँ, नवीन पाठ्यक्रम कार्य योजनाएँ और अनुसंधान भी। लेकिन समाज के लिए यह सोचने का समय आ गया है कि आज की शिक्षा विद्यार्थी केन्द्रित है या पुस्तक केन्द्रित इस बात को सोचने का समय आज समाज में आ गया है ।

शिक्षा मानव विकास का केंद्र है ख शिक्षा व्यक्ति के समग्र विकास के लिए स्कूलों और कॉलेजों के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा है। व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, राजनीतिक विकास का निर्माण करनेवाली तंत्र शिक्षा है। शिक्षा वह शैक्षणिक प्रक्रिया है जिसका पालन व्यक्ति किसी भी उम्र में ज्ञान प्राप्त करने के लिए करता है।

शिक्षा का अर्थ:

शिक्षा से संबंधित शब्दविद्या। विद्या शब्द का मूल संस्कृत धातु विद् है और इसका अर्थ जानना है। उन विचारों को सामने लाना जो हर इंसान के दिमाग में अप-टू-डेट और सार्वभौमिक रूप से मान्य हों, वह है शिक्षा। शिक्षा उन सभी प्रक्रियाओं का एकीकरण है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपनी क्षमताओं के दृष्टिकोण और उस समाज के व्यवहार मानकों को विकसित करता है जिसमें वह रहता है। शिक्षा आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करने और सत्य की खोज और मूल्यों के अनुप्रयोग में मदद करने का एक साधन है ख उच्च शिक्षा का विस्तार बढ़ा लेकिन गुणवत्ता में गिरावट जिन शिक्षण संस्थानों के पास शिक्षा के लिए आवश्यक भौतिक सुविधाएं, गुणवत्तापूर्ण पुस्तकालय और प्रयोगशालाओं और अच्छी गुणवत्ता वाले संकाय नहीं हैं, उन्हें भी मान्यता दी जाती है । है इससे कॉलेजों की संख्या में जबरदस्त इजाफा हुआ है । इससे गुणवत्ताहीन और मेधावी छात्र-छात्राएं स्नातक करने वाले छात्रों की संख्या बड़ी संख्या में निकल रही है । माध्यमिक स्तर से कॉलेज में प्रवेश करने वाले अधिकांश छात्रों में उच्च शिक्षा के लिए आवश्यक बौद्धिक और वैचारिक क्षमता होती है ।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में विकास के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण और विज्ञान प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जा सकता है । विज्ञान और प्रौद्योगिकी समाज में अंधविश्वास, पिछड़ेपन, अशिक्षा, भूख को खत्म कर सकती है । विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की प्रगति को बढ़ाने के लिए छात्रों की जिज्ञासा और जिज्ञासा को जगाना चाहिए और उनमें शोध की प्रवृत्ति पैदा करनी चाहिए। इसके लिए उच्च शिक्षा में नवीन शैक्षिक विचार धाराएं जैसे ई-लर्निंग, वर्चुअल क्लासरूम, टेलीकांफ्रेंसिंग के माध्यम से शिक्षा, मोबाइल लर्निंग का उपयोग करना होगा। तभी हमारा मानव जीवन आसान हो जाएगा और इसकी गुणवत्ता बढ़ेगी और प्रतिस्पर्धा में टिकेगी।

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

आज के युग में निरंतर व्यापक मूल्यांकन, उपचारात्मक शिक्षण, पुस्तक आधारित परीक्षा, संज्ञानात्मक मूल्यांकन, ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली आदि शिक्षा में कई नवीन गतिविधियों को लागू किया जाता है। उनमें से एक ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली है। आज के बदलते समय में, ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली को परीक्षा प्रणाली में सुधार करने पर विचार किया गया और उसी से मूल्यांकन के लिए ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली का उपयोग किया जाने लगा और जिससे मूल्यांकन आसान हो गया।

एक शिक्षक के रूप में ऑनलाइन परीक्षा को देखते हुए, यह देखा जा सकता है कि अधिकांश लोग इस परीक्षा पद्धति का उपयोग नहीं कर रहे हैं। बहुत से लोगों के पास उच्च डिग्री है और वे कंप्यूटर साक्षर भी नहीं हैं। ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली की गुणवत्ता और लोकप्रियता को बढ़ाने के लिए शिक्षकों को स्वयं इसमें दक्ष होना चाहिए और विषय में अपनी रुचि बढ़ानी चाहिए । शिक्षकों की भूमिका ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली के लिए आवश्यक हर चीज का ज्ञान प्रदान करने की होनी चाहिए । शिक्षक को पारंपरिक परीक्षा पद्धति के बजाय इसे अपनाकर इसे फैलाने का प्रयास करना चाहिए । ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली को केवल वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन के अलावा अन्य कारकों पर विचार करने की आवश्यकता है। हालांकि ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली के प्रति छात्रों और शिक्षकों का रवैया इतना सकारात्मक नहीं है, लेकिन यह पूरी तरह से नकारात्मक भी नहीं है । आज और भी लोग हैं जो कहते हैं कि पुरानी परीक्षा प्रणाली अच्छी है । लेकिन आने वाले समय में ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली के गुण, लाभ, उपयोगिता चूंकि यह अधिक है, इसलिए इस पद्धति को लागू करने का निर्णय सही है। इसलिए, इस पद्धति के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण की गुंजाइश होगी। उच्च शिक्षा में कई चुनौतियों में शिक्षा की गुणवत्ता प्रमुख चुनौतियों में से एक है। उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में सभी स्तरों पर दक्षता बढ़ाने के प्रयास किए जाने चाहिए। प्रत्येक छात्र अपने जीवन और अपने द्वारा स्वीकार किए गए पेशे में चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने की क्षमता बनाता है। साथ ही, राष्ट्रीय विकास में उनकी भागीदारी के लिए, विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को छात्रों की अनुसंधान, सक्रियता, रचनात्मकता, उच्च प्रौद्योगिकी के उपयोग की क्षमता का निर्माण करना चाहिए, उद्यमिता आदि वैश्वीकरण के युग में गुणवत्ता प्रहरी है। वैश्वीकरण सूचना प्रौद्योगिकी में क्रांति द्वरा लाया गया था।

इस प्रक्रिया में, उच्च शिक्षा वैश्विक बाजार में एक महत्वपूर्ण कारक बन गई है। इसलिए, घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा सामाजिक विकास के लिए बनाई गई प्रणाली है। मान लीजिए कि हम कॉलेज शिक्षा को मजबूत, उन्नत और प्रगतिशील बनने के लिए ज्ञान प्रदान करने के साधन के रूप में देखते हैं । कहा जाता है कि शिक्षा समाज का आईना होती है। जिसके माध्यम से समाज की योजना कैसे बनाई जाए और समाज को क्या चाहिए, इसका विचार शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करता है । शिक्षा प्रणाली के कुछ उद्देश्य होते हैं जिनके माध्यम से शिक्षा का प्रचार और प्रसार किया जाता है । प्राथमिक रूप से शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के समग्र जीवन में सुधार करना है। शिक्षा एक समर्थन प्रणाली है जो भोजन, वस्त्र, आवास की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने में मदद करती है। आज पूरी दुनिया में शिक्षा और शिक्षा प्रणाली पर आधारित कई तरह की गतिविधियाँ चल रही हैं । विभिन्न शैक्षणिक संस्थान, शैक्षिक गतिविधियाँ, नवीन पाठ्यक्रम कार्य योजनाएँ और अनुसंधान भी। लेकिन समाज के लिए यह सोचने का समय आ गया है कि आज की शिक्षा विद्यार्थी केन्द्रित है या पुस्तक केन्द्रित इस बात को सोचने का समय आज समाज में आ गया है ।

शिक्षा मानव विकास का केंद्र है ख शिक्षा व्यक्ति के समग्र विकास के लिए स्कूलों और कॉलेजों के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा है। व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, राजनीतिक विकास का निर्माण करनेवाली तंत्र शिक्षा है। शिक्षा वह शैक्षणिक प्रक्रिया है जिसका पालन व्यक्ति किसी भी उम्र में ज्ञान प्राप्त करने के लिए करता है।

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad

शिक्षा का अर्थ:

शिक्षा से संबंधित शब्दविद्या। विद्या शब्द का मूल संस्कृत धातु विद् है और इसका अर्थ जानना है। उन विचारों को सामने लाना जो हर इंसान के दिमाग में अप–टू–डेट और सार्वभौमिक रूप से मान्य हों, वह है शिक्षा। शिक्षा उन सभी प्रक्रियाओं का एकीकरण है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपनी क्षमताओं के दृष्टिकोण और उस समाज के व्यवहार मानकों को विकसित करता है जिसमें वह रहता है। शिक्षा आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करने और सत्य की खोज और मूल्यों के अनुप्रयोग में मदद करने का एक साधन है ख उच्च शिक्षा का विस्तार बढ़ा लेकिन गुणवत्ता में गिरावट जिन शिक्षण संस्थानों के पास शिक्षा के लिए आवश्यक भौतिक सुविधाएं, गुणवत्तापूर्ण पुस्तकालय और प्रयोगशालाओं और अच्छी गुणवत्ता वाले संकाय नहीं हैं, उन्हें भी मान्यता दी जाती है। है इससे कॉलेजों की संख्या में जबरदस्त इजाफा हुआ है। इससे गुणवत्ताहीन और मेधावी छात्र–छात्राएं स्नातक करने वाले छात्रों की संख्या बड़ी संख्या में निकल रही है। माध्यमिक स्तर से कॉलेज में प्रवेश करने वाले अधिकांश छात्रों में उच्च शिक्षा के लिए आवश्यक बौद्धिक और वैचारिक क्षमता होती है ।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में विकास के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण और विज्ञान प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जा सकता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी समाज में अंधविश्वास, पिछड़ेपन, अशिक्षा, भूख को खत्म कर सकती है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की प्रगति को बढ़ाने के लिए छात्रों की जिज्ञासा और जिज्ञासा को जगाना चाहिए और उनमें शोध की प्रवृत्ति पैदा करनी चाहिए। इसके लिए उच्च शिक्षा में नवीन शैक्षिक विचार धाराएं जैसे ई–लर्निंग, वर्चुअल क्लासरूम, टेलीकांफ्रेंसिंग के माध्यम से शिक्षा, मोबाइल लर्निंग का उपयोग करना होगा। तभी हमारा मानव जीवन आसान हो जाएगा और इसकी गुणवत्ता बढ़ेगी और प्रतिस्पर्धा में टिकेगी ।

आज के युग में निरंतर व्यापक मूल्यांकन, उपचारात्मक शिक्षण, पुस्तक आधारित परीक्षा, संज्ञानात्मक मूल्यांकन, ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली आदि शिक्षा में कई नवीन गतिविधियों को लागू किया जाता है। उनमें से एक ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली है। आज के बदलते समय में, ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली को परीक्षा प्रणाली में सुधार करने पर विचार किया गया और उसी से मूल्यांकन के लिए ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली का उपयोग किया जाने लगा और जिससे मूल्यांकन आसान हो गया ।

एक शिक्षक के रूप में ऑनलाइन परीक्षा को देखते हुए, यह देखा जा सकता है कि अधिकांश लोग इस परीक्षा पद्धति का उपयोग नहीं कर रहे हैं। बहुत से लोगों के पास उच्च डिग्री है और वे कंप्यूटर साक्षर भी नहीं हैं। ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली की गुणवत्ता और लोकप्रियता को बढ़ाने के लिए शिक्षकों को स्वयं इसमें दक्ष होना चाहिए और विषय में अपनी रुचि बढ़ानी चाहिए। शिक्षकों की भूमिका ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली के लिए आवश्यक हर चीज का ज्ञान प्रदान करने की होनी चाहिए। शिक्षक को पारंपरिक परीक्षा पद्धति के बजाय इसे अपनाकर इसे फैलाने का प्रयास करना चाहिए। ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली को केवल वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन के अलावा अन्य कारकों पर विचार करने की आवश्यकता है। हालांकि ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली के प्रति छात्रों और शिक्षकों का रवैया इतना सकारात्मक नहीं है, लेकिन यह पूरी तरह से नकारात्मक भी नहीं है। आज और भी लोग हैं जो कहते हैं कि पुरानी परीक्षा प्रणाली अच्छी है। लेकिन आने वाले समय में ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली के गुण, लाभ, उपयोगिता चूंकि यह अधिक है, इसलिए इस पद्धति को लागू करने का निर्णय सही है। इसलिए, इस पद्धति के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण की गुंजाइश होगी। उच्च शिक्षा में कई चुनौतियों में शिक्षा की गुणवत्ता प्रमुख चुनौतियों में से एक है। उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में सभी स्तरों पर दक्षता बढ़ाने के प्रयास किए जाने चाहिए। प्रत्येक छात्र अपने जीवन और अपने द्वारा स्वीकार किए गए पेशे में चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने की क्षमता बनाता है। साथ ही, राष्ट्रीय विकास में उनकी भागीदारी के लिए, विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को छात्रों की अनुसंधान, सक्रियता, रचनात्मकता, उच्च प्रौद्योगिकी के उपयोग की क्षमता का निर्माण

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad

करना चाहिए, उद्यमिता आदि वैश्वीकरण के युग में गुणवत्ता प्रहरी है। वैश्वीकरण सूचना प्रौद्योगिकी में क्रांति द्वरा लाया गया था।

इस प्रक्रिया में, उच्च शिक्षा वैश्विक बाजार में एक महत्वपूर्ण कारक बन गई है। इसलिए, घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षकों और छात्रों के बीच शैक्षिक सहयोग में वृद्धि हुई है। उच्च शिक्षा की गुणवत्ता: संक्षिप्त ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी इस शब्द की व्याख्या करता है 'गुणवत्ता' किसी चीज की उत्कृष्टता की डिग्री (अच्छा या खराब) सामान्य उत्कृष्टता विशिष्ट विशेषता या संकाय, एक विशेषता विशेषता, सापेक्ष प्रकृति या प्रकार या वस्तु का चरित्र, एक नमूने का परीक्षण करके निर्मित उत्पादों में मानकों को बनाए रखने की एक प्रणाली है ।

किसी भी वस्तु की गुणवत्ता एक बार की घटना नहीं हो सकती। बल्कि यह सामाजिक मांगों के अनुरूप उत्कृष्टता की ओर निरंतर होनी चाहिए। सामाजिक मांगों, वैश्विक प्रतिस्पर्धा, मानव जीवन पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव, जीवन स्तर, भारत को विश्व महाशक्ति बनाने आदि जैसे कई कारणों से भारतीय उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाया जाना चाहिए। वैश्विक प्रतिस्पर्धा के माहौल में, यह महत्वपूर्ण है कि उच्च शिक्षा के भारतीय शैक्षणिक उपलब्धियों, मूल्य प्रणाली, व्यक्तित्व की समृद्धि आदि जैसे विभिन्न मानदंडों के संबंध में किसी भी अन्य राष्ट्र के स्नातकों के रूप में प्रतिस्पर्धी ।

भारत लगभग १.२ बिलियन की आबादी के बीच उल्लेखनीय विविधता वाला सबसे बड़ा लोकतंत्र है जो दुनिया की आबादी का लगभग १७% है । भारत की लगभग ७०% जनसंख्या ग्रामीण है । वयस्क साक्षरता दर लगभग ६०% है और महिलाओं और अल्पसंख्यकों में यह काफी कम है । भारत में शिक्षा में सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी संस्थान शामिल हैं जिनमें से लगभग ४०% सरकारी हैं । लगभग १.५% की जनसंख्या वृद्धि दर के साथ, शिक्षा प्रणाली पर सस्ती कीमत पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने और साक्षरता दर में सुधार करने का जबरदस्त दबाव है। यूनेस्को की मदद से शिक्षा योजना में बड़े बदलाव किए गए और उन्होंने अनौपचारिक शिक्षा प्रणाली विकसित की जिसने महिलाओं की शिक्षा में बहुत योगदान दिया । समय-समय पर शिक्षा प्रणाली नई चुनौतियों से प्रभावित रही और सरकार ने व्यवस्था के निर्माण में एक प्रमुख भूमिका निभाई । लेकिन, भारत में उच्च शिक्षा को हमेशा कुछ प्राथमिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

यदि हम वास्तव में विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा करना चाहते हैं, तो केंद्र सरकार और राज्य सरकार दोनों को नए कार्यक्रम लाने चाहिए, शिक्षकों और छात्रों को पूरे दिल से देश के सर्वोत्तम सुधार के लिए काम करना चाहिए और माता-पिता और जनता को इस तरह के कार्यान्वयन में सहयोग करना चाहिए । कार्यक्रम । वर्तमान में 'गुणवत्ता मूल्यांकन' और 'गुणवत्ता आश्वासन' जैसे दो पहलुओं पर संयुक्त रूप से ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए, जो एक सिक्के के दो पहलू की तरह हैं। गुणवत्ता पहलुओं के जवाब में, संस्थानों ने खडज ९००१ Certification (प्रमाणन) Six Sigma, राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद National Assessment and -accreditation Council (N--C), राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड (NB-) जैसी विभिन्न गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली पहलों को अपनाया है और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि Total Quality Management (TQM^2) कुल गुणवत्ता प्रबंधन और शिक्षा में अवधारणा लागू करना शुरू कर दिया है। (TQM^2) शिक्षा का उद्देश्य एक ऐसी संस्था का निर्माण करना है जो उत्पादों या सेवाओं का उत्पादन करती है, जो ग्राहकों की 'आवश्यकताओं को पूरा करती है और उन्हें प्रसन्न करती है। तथ्य के रूप में, शिक्षा को शिक्षार्थी पर केंद्रित किया जाना चाहिए और वास्तविक अर्थों में छात्र-केंद्र शिक्षा पर जोर दिया जाना चाहिए क्योंकि इसका उद्देश्य छात्र के समग्र व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है । उच्च शिक्षा प्रणाली के गुणात्मक उन्नयन के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं। विश्व स्तरीय उच्च शिक्षा के विकास के लिए शिक्षा के फीडर चरणों को विकसित करने की आवश्यकता है।

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad

२. १२१ वीं योजना के अंत तक उच्च शिक्षा में १५% की जीआरई दर प्राप्त करने के लिए केंद्र सरकार को राज्य के विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को काफी अधिक धनराशि आवंटित करनी चाहिए। पिछड़े क्षेत्रों में स्थित विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को अधिक वार्षिक अनुदान प्राप्त करना चाहिए ताकि अधिक से अधिक छात्रों को उनके दरवाजे पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए आकर्षित किया जा सके जिससे ब्रेन ड्रेन पर रोक लगे।

३. संस्थाओं में जवाबदेही और स्वायत्तता के विवेकपूर्ण मिश्रण की आवश्यकता है।

४. संस्थाओं के पास उचित मिशन, संसाधन और उद्देश्य होने चाहिए।

५. प्रभावी प्रशासन का परिचय और बेहतरी के लिए प्रबंधकीय सुधार एक पूर्वापेक्षा है आदेश और नियंत्रण।

६. सभी चयनों का आधार केवल योग्यता ही होनी चाहिए और शैक्षणिक कर्मचारियों के लिए पारदर्शी पदोन्नति नीतियां होनी चाहिए और इसी तरह के योग्यता आधारित छात्रों के चयन को लागू किया जाना चाहिए।

७. पेशेवरों का अभ्यास करके कौशल विकास पाठ्यक्रमों का शिक्षण और प्रौद्योगिकियों में नवीनतम विकास के साथ पाठ्यक्रम के निरंतर उन्नयन की आवश्यकता है। सरकार, विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को यूजीसी नेट और एसएलईटी परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले अपने छात्रों के नगण्य प्रतिशत के पीछे के कारण पर पुनर्विचार करना चाहिए। ये सुधार न केवल हमारे पास आउट की गुणवत्ता में वांछित परिवर्तन लाएंगे, जो भविष्य में सार्वजनिक क्षेत्रों के साथ-साथ निजी क्षेत्रों में शिक्षण,अनुसंधान और विस्तार में विभिन्न पदों पर कार्य करेंगे, बल्कि अन्य क्षेत्रों के लिए समाज के लिए शिक्षा की गुणवत्ता में आवश्यक परिवर्तन लाने के लिए भी आवश्यक हैं।

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad